([illegible])

प्रसार शिक्षा का दर्शन मानव विकास पर आधारित है। ग्रामीणों को अपने पैरों पर खड़े होने की प्रेरणा प्रदान कर उनके सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहित करना इसका मुख्य उद्देश्य है। इसी लक्ष्य की पूर्ति के निमित्त प्रसार कार्य का प्रारम्भ हुआ। हर देश, विशेष रूप से प्रजातांत्रिक शासनबद्ध का यही प्रयास रहता है कि उनके नागरिक समुन्नत हो समुन्नत नागरिक सम्पन्न देश प्रगति पथ पर निरंतर तेज गति से बढ़ते है। प्रसार शिक्षा का दर्शन इसी अवधारणा पर आधारित है कि प्रत्येक व्यक्ति विकसित होना चाहता है। तथा अपने सर्वतोमुखी परिवर्द्धन मे विश्वास रखता है।

प्रसार दर्शन ग्रामीण समुदाय के विकास को लक्षित है। ग्रामीणों में आत्मविश्वास जगाकर ही उन्हे प्रगति पथ पर लाया जा सकता है। उनके पिछड़ेपन को दूर करके उनमे यह आत्म-विश्वास जागना आवश्यक है कि वे किसी से कम नही है प्र

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Date: / /

मनुष्य निजी चेष्टाओं द्वारा वांछित परिवर्तनों या लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल होती है। तो स्वयं पर उसका विश्वास बढ़ता है। जब हर व्यक्ति आत्म-विश्वास से परिपूर्ण होकर प्रगति-पथ पर अग्रसर होता है। तो पूरा समुदाय और कालांतर में पूरा राष्ट्र विकास से परिपूर्ण होकर प्रगति-पथ पर अग्रसर होता है तो पूरा समुदाय और कालांतर में पूरा राष्ट्र विकास के मार्ग पर आ खड़ा होता है। इस प्रकार स्वत-प्रेरणा द्वारा नई-नई जानकारियों नूतन पद्धतियों को अपनाते हुए मनुष्य पूरे समाज के स्थायी विकास में सहायक सिद्ध होता है। डॉ रंजीत सिंह ने प्रसार दर्शन को निम्नलिखित विचारों पर आधारित माना है।

समाज में घर आधारभूत इकाई है। (Home is the basic unit in society)

प्रजातंत्र में व्यक्ति सर्वोपरि है। (Individual is Supreme in democracy)

परिवार प्रथम मौलिक मानवीय समूह (समुदाय) है। (Family is the first primary human group)

अवहार में परिवर्तन एक धीमा प्रक्रम (तरीका) है। (Change in behaviour is a slow process)

प्रत्येक नए परिवर्तन का सामना प्रतिरोध से होता है। (Every new change, technology, faces resistance)

विज्ञान तथा तकनीकी में विश्वास (Faith in science and technology)

सामाजिक न्याय के प्रति आस्था (Faith in social justice)

प्रसार दर्शन को इस प्रकार भी समझा जा सकता है —

Date: / /

मनोवृत्ति में परिवर्तन
↓
व्यवहार में परिवर्तन
↓
कार्य - निष्पादन - शैली में परिवर्तन

प्रसार शिक्षा का दर्शन

उपर्युक्त वर्णित परिवर्तन 23g के विभिन्न चरण स्वतः - प्रेरणा से प्रारम्भ होते हैं, उत्प्रेरित मनुष्य ही अपनी समस्याओं के निदान ढूंढने का प्रयास करता है, वांछित लक्ष्य प्रयत्नशील रहता है, जब मनुष्य स्व पर विश्वास करता है तो उसने विवेक का प्रयोग करता है एवं तर्कपूर्ण निर्णय लेने में सक्षम होता है, इन समस्त प्रक्रियाओं में शिक्षा के माध्यम से मात्र सूचनाएं ही प्रसारित नहीं होती वरन व्यक्ति की ज्ञान - स्तर मनोवृत्ति व्यवहार तथा कार्य निष्पादन - शैली में भी वांछित परिवर्तन आते हैं, व्यक्ति को प्रसार दर्शन का केन्द्र बिन्दु मानते हुए प्रसार दर्शन की व्याख्या निम्नांकित संदर्भों में की जा सकती है-

(1) व्यक्ति सर्वोपरि संसाधन है
(2) व्यक्ति एवं उसके परिवेश का उत्तरोत्तर विकास
(3) स्वतः प्रेरणा एवं स्वावलम्बन
(4) मनोवृत्ति, दृष्टिकोण सोचने - विचारने के ढंग आदतों का व्यवहार में परिवर्तन
(5) स्थानीय साधनों एवं स्थानीय नेतृत्व में विश्वास
(6) वैज्ञानिक जानकारियों तथा तकनीकी प्रवृत्ति के प्रति जिज्ञासा एवं विश्वास

मीरा गोविन्द महाविद्यालय शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Date: / /

(7) पारस्परिक सहयोग सद्भावना एवं जन कल्याण मे अभिरूचि
(8) ज्ञानार्जन के निमित्त नये द्वार खोलना तथा उसे संस्थागत बंधनों से विमुक्त करना
(9) परिवार, समुदाय, समाज जैसी सामाजिक संस्थाओं के प्रति आदर भाव
(10) प्रजातन्त्र एवं सामाजिक न्याय मे विश्वास
(11) जन-आस्थाओं संस्कारो तथा संस्कृति की सुरक्षा एवं उनमें समयानुकूल अपेक्षित परिवर्तन
(12) मानव-कल्याण एवं मानव-विकास के प्रति आस्थाबद्ध होने के फलस्वरूप एक अनन्त प्रक्रिया

प्रसार दर्शन की विशेषतायें
(CHARA, CTERISTIS OF THEOSPHY OF EXTENSION)

प्रसार दर्शन मूल रूप से व्यक्ति को शिक्षित करके उसकी मनोवृत्ति दृष्टिकोण एवं व्यवहार मे परिवर्तन लाने पर आधारित है, इसका उद्देश्य मानव-कल्याण है, अनेक संदर्भों मे यह पाया गया है कि भारतीय दर्शन की आधारभूत बाते जैसे-ज्ञान दान धर्म तपस्या पर्यावरण-परिवार-परिवार-समाज के प्रति कर्तव्य-परायणता आदि प्रसार दर्शन मे समाहित है, जैसा कि पूर्व मे कहा जा चुका है, प्रसार शिक्षा का केन्द्र-बिन्दु मानव है, अतः प्रसार कार्य की समस्त परिकल्पनायें मनुष्य एवं उसके सुखी-समृद्ध जीवन से जुड़ी हुई है, प्रसार दर्शन की विशेषताओं पर यदि हम दृष्टिपात करे तो यह बात और भी स्पष्ट हो जाती है।

22/9/2020

प्राचार्य
... महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया